IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

Check for updates

OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 2

Month: April

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 09.04.2026

Citation:

डॉ. उषा वैद्य, लक्ष्मी ठाकुर "मध्य प्रदेश में लैंगिक समानता के परिप्रेक्ष्य में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के प्रभाव का समाजशास्त्री अध्ययन" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 5, no. 2, 2026, pp. 47-60

DOI:

10.69968/ijisem.2026v5i247-60

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

मध्य प्रदेश में लैंगिक समानता के परिप्रेक्ष्य में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के प्रभाव का समाजशास्त्री अध्ययन

डॉ. उषा वैद्य[1], लक्ष्मी ठाकुर[2]

[1] प्राध्यापक, समाजशास्त्र, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

[2] शोधार्थी, समाजशास्त्र, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

सारांश

भारतीय समाज में लैंगिक असमानता एक दीर्घकालिक सामाजिक समस्या रही है, जिसमें विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं अधिकारों के प्रति भेदभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस संदर्भ में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (BBBP) अभियान एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहल के रूप में उभरा है, जिसका उद्देश्य बालिका भ्रूण हत्या को रोकना, बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना तथा समाज में सकारात्मक लैंगिक दृष्टिकोण विकसित करना है। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के भोपाल (शहरी) और रायसेन (अर्ध-ग्रामीण) जिलों में इस अभियान के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध परिमाणात्मक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें 250 उत्तरदाताओं से स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए। 5-बिंदु लिकर्ट स्केल आधारित संरचित प्रश्नावली का उपयोग करते हुए जागरूकता, सामाजिक दृष्टिकोण, तथा व्यवहारिक परिवर्तनों का आकलन किया गया। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि अभियान के प्रति व्यापक जागरूकता विकसित हुई है तथा 80 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने इसे बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में प्रभावी माना। मीडिया, शैक्षणिक संस्थानों एवं सरकारी कार्यक्रमों की भूमिका इस संदर्भ में महत्वपूर्ण रही। सामाजिक सोच में सकारात्मक परिवर्तन, जैसे बाल विवाह में कमी, बेटियों के प्रति सम्मान में वृद्धि और शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि, स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए हैं। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मान्यताओं, आर्थिक सीमाओं और संसाधनों की कमी के कारण यह परिवर्तन अभी पूर्णतः व्यवहारिक स्तर पर स्थापित नहीं हो पाया है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि BBBP अभियान ने सामाजिक चेतना को सुदृढ़ आधार प्रदान किया है, परंतु इसके स्थायी प्रभाव हेतु निरंतर क्रियान्वयन, स्थानीय अनुकूलन और व्यापक जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक है।

कुंजी शब्द: लैंगिक समानता, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बालिका शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, जागरूकता अभियान.

परिचय

भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष के बीच भूमिका, अधिकार और अवसरों को लेकर गहराई से स्थापित असमानता एक ऐतिहासिक सच्चाई रही है। पितृसत्तात्मक संरचना ने महिलाओं को पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक निर्णयों से अलग रखा, जिससे स्त्रियों की सामाजिक स्थिति कमजोर बनी रही। विशेष रूप से बालिकाओं के संदर्भ में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भेदभाव आज भी व्यापक रूप से देखा जा सकता है। (नायक 2024) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने संवैधानिक रूप से स्त्रियों को समान अधिकार दिए, परंतु सामाजिक व्यवहार में अपेक्षित बदलाव बहुत धीरे-धीरे हुआ। शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कुछ प्रगति के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों और पिछड़े जिलों में बालिकाओं की स्थिति आज भी चिंताजनक है।

कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शिक्षा से वंचन और घरेलू हिंसा जैसी समस्याएँ आज भी समाज में व्याप्त हैं। (राय 2019)

इस परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार द्वारा 22 जनवरी 2015 को आरंभ किया गया 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) अभियान एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक पहल बनकर सामने आया। इस अभियान का मूल उद्देश्य बालिका भ्रूण हत्या पर नियंत्रण, बालिकाओं की शिक्षा में वृद्धि और उनके प्रति सामाजिक सोच में सकारात्मक बदलाव लाना था। इस पहल के तहत सरकार द्वारा जनजागरूकता, नीति निर्माण, और संस्थागत समन्वय के माध्यम से व्यापक सुधार की कोशिश की गई। (रेडियोवाला एवं एस. मोलवाने 2021) मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जो सांस्कृतिक रूप से विविध है और जहाँ कई जिलों में लैंगिक अनुपात चिंता का विषय है, 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान का कार्यान्वयन और उसका प्रभाव एक गहन अध्ययन की माँग करता है। (सुनंदम्मा और काकड़े 2020) विशेष रूप से भोपाल (राजधानी एवं शहरी प्रतिनिधि) और रायसेन (अर्ध-ग्रामीण प्रतिनिधि) जैसे जिलों का चयन इस अध्ययन के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इन दोनों क्षेत्रों में सामाजिक, शैक्षिक, और सांस्कृतिक विविधताएँ हैं जो अभियान की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकती हैं। यह अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह जानने का प्रयास करता है कि किस प्रकार यह राष्ट्रीय अभियान इन जिलों में सामाजिक व्यवहार, लैंगिक दृष्टिकोण, और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी सिद्ध हुआ है। साथ ही यह शोध स्थानीय समुदाय की भागीदारी, जागरूकता स्तर, सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रयासों की भूमिका, और अभियान से जुड़े व्यवहारिक बदलावों का भी मूल्यांकन करेगा।

महिला सशक्तिकरण हेतु सामाजिक सुधार आंदोलन

19वीं शताब्दी में जब भारत में अंग्रेज़ी शासन स्थापित हुआ, तो समाज सुधार आंदोलनों की एक नई लहर देखने को मिली। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के उन्मूलन के लिए अभियान चलाया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बालिका शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया और विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए सामाजिक समर्थन तैयार किया। महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने लड़कियों के लिए पहले स्कूल की स्थापना की और दलित एवं वंचित महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन चलाया। (अग्निहोत्री एवं मालीपाटिल 2018बी) डॉ. भीमराव आंबेडकर ने महिलाओं के लिए समान अधिकारों की जोरदार वकालत की और हिन्दू कोड बिल के माध्यम से विवाह, उत्तराधिकार, संपत्ति और भरण-पोषण जैसे अधिकारों में समानता का आधार तैयार किया। इन सुधारकों के कार्यों के परिणामस्वरूप भारत में महिलाओं की स्थिति में जागरूकता और बदलाव की शुरुआत हुई, यद्यपि समाज में उसका प्रभाव धीरे-धीरे पड़ा।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बालिकाओं की स्थिति

21वीं सदी में भारत ने आर्थिक, तकनीकी और शैक्षिक क्षेत्रों में अनेक सफलताएँ प्राप्त की हैं, परंतु बालिकाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। ग्रामीण भारत में अब भी कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शिक्षा से वंचन, कुपोषण और बाल श्रम जैसी समस्याएं व्याप्त हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, भारत में आज भी कई राज्यों में बालिका जन्म अनुपात असंतुलित है और लिंग आधारित भेदभाव का असर उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, और सुरक्षा पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। (डी. ए. साहू 2023) 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों ने इस दिशा में चेतना जागृत करने का कार्य किया है, लेकिन व्यवहारिक स्तर पर समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिए दीर्घकालीन और सतत प्रयासों की आवश्यकता है। मध्य प्रदेश के कई जिले, जैसे रायसेन और भोपाल, अब भी ऐसी सामाजिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं जहाँ बालिकाओं को समान अवसर नहीं मिल पाते। (भट और कुरैशी 2019) बालिकाओं की शिक्षा में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर उपलब्धता, और निर्णय निर्माण में भागीदारी को सुनिश्चित किए बिना महिला सशक्तिकरण की परिकल्पना अधूरी मानी जाती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इन ऐतिहासिक, संवैधानिक और सामाजिक कारकों की समग्र समीक्षा की जाए। (तबाई, 2017)

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान

भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई योजनाएं और अभियानों का आयोजन किया गया है। इनमें से एक प्रमुख और प्रभावी अभियान है 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' , जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में शुरू किया गया। (परमार और शर्मा 2020) यह अभियान भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से लड़कियों की सुरक्षा, शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इस अभियान का लक्ष्य लैंगिक असमानता को समाप्त करना, बालिका भ्रूण हत्या और महिला सशक्तिकरण के मुद्दों को संबोधित करना तथा लड़कियों की शिक्षा में सुधार करना है। इस अभियान को समाज में जागरूकता फैलाने, समाज में लड़कियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने और महिला अधिकारों की रक्षा करने के उद्देश्य से चलाया गया है। (इंडिया, 2019)

इस अभियान ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाने में मदद की है, खासकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में। इसके तहत किए गए प्रयासों से कन्या भ्रूण हत्या की दर में कमी आई है और लड़कियों की शिक्षा में भी वृद्धि हुई है। सरकार द्वारा दी गई विभिन्न योजनाओं और प्रोत्साहनों ने समाज में महिलाओं और लड़कियों के प्रति मानसिकता में बदलाव लाने में मदद की है। इसके साथ ही,

अभियान ने परिवारों में लड़कियों के जन्म को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न किया है। (एम. सरकार 2025)

अभियान के मुख्य तत्व

- **समान लिंग अनुपात:** अभियान के तहत, 'लड़कियों का जन्म' और 'लड़कियों का जीवन' सुरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। स्वास्थ्य सुविधाओं और अस्पतालों में जागरूकता फैलाने के लिए उपाय किए गए हैं, ताकि भ्रूण हत्या और लिंग चयन को रोका जा सके।
- **शिक्षा पर ध्यान:** यह अभियान सरकारी और निजी स्कूलों में लड़कियों को शिक्षा प्रदान करने पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। स्कूलों में बालिका शिक्षा के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है।
- **लड़कियों के लिए सशक्तिकरण:** इस अभियान का एक अन्य उद्देश्य लड़कियों के आत्मविश्वास को बढ़ाना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है, ताकि वे अपनी स्थिति को बदलने में सक्षम हों।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के उद्देश्य

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में महिलाओं और लड़कियों के प्रति भेदभाव को खत्म करना और उन्हें समान अधिकार दिलाना है। विशेष रूप से यह अभियान इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है:

- इस योजना का उद्देश्य समाज में लड़कियों के प्रति निहित भेदभाव से निपटना है तथा देश के नागरिकों की मानसिकता में बदलाव लाना है।
- इस योजना का उद्देश्य बाल लिंगानुपात (CSR) में कमी सहित विभिन्न मुद्दों का समाधान करना, लिंग आधारित असमानताओं को समाप्त करते हुए महिला सशक्तिकरण को बढ़ाना तथा बालिकाओं की सुरक्षा करना है।
- बालिकाओं की शिक्षा और उनकी सामाजिक भागीदारी इस योजना के अन्य उद्देश्य हैं।
- इस योजना के तहत व्यापक अखिल भारतीय अभियान के माध्यम से बाल लिंगानुपात मुद्दे का समाधान किया जाएगा, जबकि लैंगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 100 जिलों में बहु-क्षेत्रीय सरकारी हस्तक्षेप भी किया जाएगा।
- इस योजना का उद्देश्य उत्तराखंड, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में बाल लिंग अनुपात (CSR) में सुधार करना है।
- इस योजना का एक अन्य उद्देश्य बाल विवाह की रोकथाम तथा घरेलू हिंसा के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न से बालिकाओं की सुरक्षा करना है।
- इस अभियान का एक मुख्य उद्देश्य लड़कियों के खिलाफ होने वाली हिंसा, शोषण और भ्रूण हत्या को रोकना है। समाज में लिंग चयनात्मक गर्भपात, कन्या भ्रूण हत्या, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की बढ़ती घटनाओं को रोकना।

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान की आवश्यकता

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की आवश्यकता भारत में घटते लिंगानुपात, कन्या भ्रूण हत्या और लैंगिक असमानता जैसी गंभीर समस्याओं के कारण महसूस हुई। 2001 से 2011 के बीच लड़कियों की संख्या में कमी ने समाज में महिलाओं के प्रति बढ़ते भेदभाव और हिंसा को उजागर किया। इसी संदर्भ में इस अभियान की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य लड़कियों को समान अवसर, सुरक्षा और सम्मान प्रदान करना है। (कुमार 2023) भारत में कन्या भ्रूण हत्या और लिंग चयनात्मक गर्भपात एक प्रमुख समस्या रही है, जो पुत्र-प्राथमिकता की मानसिकता से जुड़ी है। इस कारण लड़कियों के जन्म को हतोत्साहित किया जाता है, जिससे लिंगानुपात में असंतुलन उत्पन्न होता है। यह अभियान इस सोच को बदलने और बेटियों के जीवन के महत्व को रेखांकित करने का प्रयास करता है। (कपूर और के. 2021)

लड़कियों की शिक्षा का अभाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कई परिवारों में सामाजिक परंपराओं, आर्थिक कारणों और रूढ़िवादी सोच के कारण लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। यह उनकी आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रगति में बाधा बनता है। (शर्मा 2023) अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि लड़कियों को भी शिक्षा में समान अधिकार प्राप्त हैं और उनकी शिक्षा समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। (रेड्डी 2017) इसके अतिरिक्त, महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा भी एक गंभीर मुद्दा है, क्योंकि उन्हें हिंसा, शोषण और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। यह अभियान उनकी सुरक्षा, अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण पर बल देता है। अंततः, भारत में प्रचलित पितृसत्तात्मक सोच को बदलना इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य है। यह लड़कियों को समान अवसर देने के साथ-साथ समाज में लैंगिक समानता की भावना विकसित करने का प्रयास करता है, जिससे वे स्वतंत्र रूप से अपने जीवन में आगे बढ़ सकें। (झा 2018)

मध्य प्रदेश में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान का क्रियान्वयन

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' (BBBP) अभियान भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमाए हुए लिंग आधारित असमानताओं को दूर करने

के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण सरकारी पहल के रूप में उभरा है, विशेष रूप से घटते बाल लिंग अनुपात और लड़कियों की असमान स्थिति के संबंध में। मध्य प्रदेश के संदर्भ में, जहाँ लैंगिक भेदभाव, कन्या भ्रूण हत्या और लड़कियों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच से संबंधित मुद्दे दशकों से बने हुए हैं, इस अभियान का कार्यान्वयन महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखता है। अभियान न केवल लिंग-चयनात्मक प्रथाओं को रोकने का प्रयास करता है, बल्कि बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण के माध्यम से बालिकाओं के अस्तित्व, सुरक्षा और शिक्षा को बढ़ावा देना भी चाहता है। इसमें सामाजिक मानसिकता में बदलाव लाने और बालिकाओं के मूल्य को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न सरकारी विभागों, समुदाय-स्तर के हितधारकों और नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं के बीच समन्वित प्रयास शामिल हैं। राज्य में अभियान का कार्यान्वयन क्षेत्र-विशिष्ट रणनीतियों, सार्वजनिक जुड़ाव प्रयासों और समर्थन तंत्रों के साथ विकसित हुआ है, जिसका उद्देश्य तत्काल और दीर्घकालिक दोनों तरह के बदलाव लाना है। यह खंड मध्य प्रदेश में अभियान के संरचनात्मक, प्रशासनिक और परिचालन पहलुओं का अन्वेषण करता है, तथा योजना, समन्वय और आउटरीच प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो इसके जमीनी प्रभाव को आकार देते हैं।

राज्य स्तर पर अभियान की रणनीति

भारत सरकार द्वारा 2015 में शुरू किया गया बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) अभियान एक बहु-क्षेत्रीय पहल है जिसका उद्देश्य घटते बाल लिंग अनुपात (CSR) को उलटना और बालिकाओं के अस्तित्व, संरक्षण और शिक्षा के माध्यम से लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। राज्य स्तर पर, मध्य प्रदेश ने इस राष्ट्रीय मिशन को एक अनुकूली और संदर्भ-संवेदनशील रणनीति के साथ अपनाया है जो राज्य के विविध सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य, क्षेत्रीय असमानताओं और जागरूकता और लिंग संवेदनशीलता के विभिन्न स्तरों पर विचार करता है। राज्य की रणनीति अधिक प्रभावशाली और टिकाऊ कार्यान्वयन के लिए नियोजन, विभागों के अभिसरण, सामुदायिक भागीदारी और निगरानी तंत्र को एकीकृत करती है।

बहु-विभागीय अभिसरण मॉडल

राज्य द्वारा अपनाई गई मुख्य रणनीतियों में से एक है अभियान के उद्देश्यों को एकीकृत तरीके से प्राप्त करने के लिए विभिन्न सरकारी विभागों का अभिसरण। महिला एवं बाल विकास विभाग (DWCD) नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है, जबकि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, स्कूल शिक्षा, पंचायती राज, शहरी प्रशासन और जनसंपर्क जैसे विभाग निकट समन्वय में काम करते हैं। यह अभिसरण मॉडल एक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है जहाँ बालिकाओं के स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा, सुरक्षा और अधिकारों को एक साथ संबोधित किया जाता है।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के नेतृत्व में एक समर्पित राज्य टास्क फोर्स का गठन किया गया, जो नीति-स्तरीय मार्गदर्शन प्रदान करता है, राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करता है, और जिला-स्तरीय कार्यान्वयन की समीक्षा करता है। जिला स्तर पर, जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) के अधिकारियों, स्वास्थ्य अधिकारियों, शिक्षा अधिकारियों और स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ समन्वय करते हैं।

लक्षित जिले और जनसांख्यिकी फोकस

मध्य प्रदेश ने कम CSR, महिला साक्षरता और उच्च मातृ एवं शिशु मृत्यु दर जैसे महत्वपूर्ण संकेतकों के आधार पर केंद्रित हस्तक्षेप के लिए प्राथमिकता वाले जिलों की पहचान की। मुरैना, भिंड, दतिया, रायसेन और भोपाल जैसे जिलों को या तो खराब जनसांख्यिकीय संकेतकों या लिंग आधारित भेदभाव से संबंधित उभरती शहरी चुनौतियों के कारण प्राथमिकता दी गई।

इन जिलों में, BBBP उद्देश्यों को क्रियान्वित करने के लिए ब्लॉक-स्तरीय सूक्ष्म-योजनाएँ विकसित की गईं। ये सूक्ष्म-योजनाएँ स्थानीय सांस्कृतिक मानदंडों, सामुदायिक संरचना और लैंगिक समानता में बाधाओं पर विचार करती हैं। लिंग-पक्षपाती लिंग चयन प्रथाओं और स्कूलों में लड़कियों के कम नामांकन के इतिहास वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन संचार (BCC)

यह मानते हुए कि लैंगिक भेदभाव के अंतर्निहित मुद्दे सामाजिक दृष्टिकोण और विश्वासों में गहराई से अंतर्निहित हैं, राज्य की रणनीति सूचना, शिक्षा और संचार (IEC) और व्यवहार परिवर्तन संचार (BCC) पर जोर देती है। व्यापक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए हिंदी और स्थानीय बोलियों में जन जागरूकता अभियान विकसित किए गए हैं। लगातार आईईसी प्रयासों के कारण मध्य प्रदेश के कई हिस्सों में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," "बेटी है अनमोल," और "बेटी नहीं बचाओगे, तो बहू कहाँ से लाओगे?" जैसे नारे घर-घर में प्रचलित हो गए हैं।

गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाज के साथ साझेदारी

योजना और कार्यान्वयन दोनों चरणों में गैर-सरकारी संगठन और नागरिक समाज समूह सक्रिय रूप से शामिल थे। लैंगिक मुद्दों में विशेषज्ञता रखने वाले गैर सरकारी संगठनों को सामुदायिक लामबंदी कार्यक्रम आयोजित करने, लड़कियों वाले परिवारों के लिए परामर्श की सुविधा प्रदान करने और तीसरे पक्ष के ऑडिट और प्रभाव आकलन करने के लिए शामिल किया गया था। इन साझेदारियों ने सुनिश्चित किया कि अभियान समुदाय-उन्मुख रहे और हाशिए पर पड़ी आवाज़ों को शामिल किया जाए।

IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

राज्य सरकार ने समय के साथ व्यवहार में होने वाले बदलावों का मूल्यांकन करने और धारणा अध्ययन करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों और शोध निकायों के साथ भी काम किया। इस शैक्षणिक सहयोग से रणनीति को परिष्कृत करने और नीति प्रक्रिया में अनुभवजन्य कठोरता लाने में मदद मिली।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भोपाल और रायसेन ज़िलों के परिवारों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (BBBP) अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर का विश्लेषण करना।
2. बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और अधिकारों पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. लैंगिक समानता की ओर समाजिक दृष्टिकोण में आए परिवर्तन में BBBP अभियान की भूमिका की समीक्षा करना।
4. उन सामाजिक-जनांकिकीय (सामाजिक व जनसंख्या से संबंधित) कारकों की पहचान करना, जो BBBP अभियान की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।
5. चयनित जिलों में BBBP अभियान के चलते लैंगिक भेदभाव में आई संभावित कमी का आकलन करना।
6. जनसमुदाय की प्रतिक्रियाओं और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर नीतिगत सुधारों हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

यह शोध मध्य प्रदेश के भोपाल और रायसेन जिलों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दोनों क्षेत्रों के भिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक संदर्भों के आधार पर बालिकाओं की स्थिति और अभियान के प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है।

यह अध्ययन परिमाणात्मक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें समाज में बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकारों एवं लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में आए बदलावों का वर्णन तथा कारण-प्रभाव संबंधों का विश्लेषण किया गया है। शोध में सर्वेक्षण विधि अपनाई गई, जिसमें 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली दो भागों–जनसांख्यिकीय जानकारी और मुख्य सर्वेक्षण प्रश्न–में विभाजित थी। मुख्य प्रश्नों के अंतर्गत जागरूकता, लैंगिक समानता की धारणा और सामाजिक परिवर्तन का आकलन किया गया।

प्रश्नावली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने हेतु 50 उत्तरदाताओं पर पायलट अध्ययन किया गया तथा आवश्यक संशोधन किए गए। शोध में नैतिक मानकों का पालन करते हुए उत्तरदाताओं की स्वैच्छिक भागीदारी, गोपनीयता और सूचित सहमति सुनिश्चित की गई।

नमूना चयन के अंतर्गत स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण अपनाया गया। कुल 250 उत्तरदाताओं को चार स्तरों–शहरी भोपाल, ग्रामीण भोपाल, शहरी रायसेन और ग्रामीण रायसेन–से समान रूप से चुना गया। इससे शहरी-ग्रामीण अंतर का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ।

डेटा संकलन मुख्यतः प्राथमिक स्रोतों (प्रश्नावली) के माध्यम से किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों का उपयोग केवल वैचारिक आधार के लिए किया गया। डेटा संग्रह तीन माह तक चला और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष तथा शहरी क्षेत्रों में ऑनलाइन माध्यमों से प्रश्नावली वितरित की गई।

सांख्यिकीय विश्लेषण में आवृत्ति, प्रतिशत, सारणीय प्रस्तुति, ग्राफ एवं चार्ट के साथ-साथ टी-परीक्षण और पियर्सन सहसंबंध जैसे अनुमानात्मक उपकरणों का उपयोग किया गया। इससे विभिन्न चरों के बीच संबंधों और अंतरों का वैज्ञानिक परीक्षण संभव हुआ।

अध्ययन के निहितार्थ दर्शाते हैं कि अभियान ने समाज में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत की है, परंतु शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभाव में अंतर पाया गया। नीति निर्माण हेतु क्षेत्र-विशिष्ट रणनीतियों, जागरूकता कार्यक्रमों की निरंतरता, पुरुषों की भागीदारी, तथा शिक्षा और संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता सामने आई।

निष्कर्षतः, यह शोध स्पष्ट करता है कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान ने लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है, किंतु इसके स्थायी और व्यापक प्रभाव के लिए निरंतर, समन्वित एवं स्थानीय स्तर पर अनुकूलित प्रयास आवश्यक हैं।

विश्लेषण

आँकड़ा किसी भी शोध प्रक्रिया का मूल आधार होता है, जो अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ठोस प्रमाण प्रस्तुत करता है। किसी सामाजिक अभियान की प्रभावशीलता को आंकने के लिए आँकड़ों का संग्रहण, विश्लेषण एवं व्याख्या अत्यंत आवश्यक होती है। प्रस्तुत अध्याय में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" (BBBP) अभियान के संदर्भ में एकत्रित आँकड़ों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया है, जो मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त 250 उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है। यह अध्याय आँकड़ों की विवेचना के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार BBBP अभियान ने बालिकाओं की सामाजिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकारों तथा लैंगिक समानता के प्रति जनमानस की सोच में परिवर्तन लाने का कार्य किया है। आँकड़ों

का विश्लेषण सांख्यिकीय उपकरणों जैसे कि सांख्यिकीय औसत, मानक विचलन, सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis), t-परीक्षण (t-test) आदि की सहायता से किया गया है, जिससे परिकल्पनाओं की पुष्टि या खंडन सुनिश्चित हो सके। इस अध्याय के माध्यम से पाठक को यह स्पष्ट जानकारी प्राप्त होगी कि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा भौगोलिक कारकों के अनुसार BBBP अभियान का प्रभाव किस प्रकार परिवर्तित होता है और यह अभियान कितनी गहराई तक समाज को प्रभावित करने में सक्षम रहा है।

तालिका 1: आयु वर्ग

आयु वर्ग					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	25 से कम	55	22.0	22.0	22.0
	26 - 35	96	38.4	38.4	60.4
	36 - 45	39	15.6	15.6	76.0
	45 से अधिक	60	24.0	24.0	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं में आयु वर्ग के आधार पर वितरण का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता 26–35 वर्ष आयु वर्ग से संबंधित हैं, जिनकी संख्या 96 है, जो कुल का 38.4 प्रतिशत है। इसके बाद 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के 60 उत्तरदाता पाए गए, जो 24.0 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं 25 वर्ष से कम आयु वर्ग में 55 उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 22.0 है। सबसे कम प्रतिनिधित्व 36–45 वर्ष आयु वर्ग का है, जिसमें 39 उत्तरदाता अर्थात 15.6 प्रतिशत शामिल हैं। इस प्रकार, समग्र रूप से अध्ययन में युवा एवं मध्यम आयु वर्ग (विशेषकर 26–35 वर्ष) के उत्तरदाताओं की भागीदारी अधिक दिखाई देती है, जबकि 36–45 वर्ष आयु वर्ग की भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही।

तालिका 2: लिंग

लिंग					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	पुरुष	127	50.8	50.8	50.8
	महिला	123	49.2	49.2	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं में लिंग के आधार पर वितरण लगभग संतुलित पाया गया है। इसमें पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या 127 है, जो कुल का 50.8 प्रतिशत है, जबकि महिला उत्तरदाताओं की संख्या 123 है, जो 49.2 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, अध्ययन में पुरुष और महिला दोनों वर्गों की भागीदारी लगभग समान रही, हालांकि प्रतिशत के आधार पर पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या महिलाओं की तुलना में थोड़ी अधिक पाई गई।

तालिका 3: शिक्षा का स्तर

शिक्षा का स्तर					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	उच्च विद्यालय उससे कम	37	14.8	14.8	14.8
	स्नातक तक	98	39.2	39.2	54.0
	स्नातकोत्तर तक	70	28.0	28.0	82.0
	अन्य	45	18.0	18.0	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं के शिक्षा स्तर का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता स्नातक स्तर तक शिक्षित हैं, जिनकी संख्या 98 है, जो कुल का 39.2 प्रतिशत है। इसके बाद स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित उत्तरदाताओं की संख्या 70 है, जो 28.0 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। अन्य शिक्षा श्रेणी में 45 उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत 18.0 है। वहीं उच्च विद्यालय अथवा उससे कम शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या 37 है, जो कुल का 14.8 प्रतिशत है और यह सबसे कम है। इस प्रकार, अध्ययन में उच्च शिक्षा प्राप्त (विशेषकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर) उत्तरदाताओं की भागीदारी अधिक दिखाई देती है।

तालिका 4: निवास

निवास					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	भोपाल	125	50.0	50.0	50.0
	रायसेन	125	50.0	50.0	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं के निवास के आधार पर वितरण पूर्णतः समान पाया गया है। इसमें भोपाल से संबंधित उत्तरदाताओं की संख्या 125 है, जो कुल का 50.0 प्रतिशत

है, जबकि रायसेन जिले से भी 125 उत्तरदाता शामिल हैं, जिनका प्रतिशत भी 50.0 है। इस प्रकार, अध्ययन में दोनों निवास क्षेत्रों से समान भागीदारी सुनिश्चित की गई है, जिससे दोनों क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व संतुलित रूप में परिलक्षित होता है।

तालिका 5: क्षेत्र

क्षेत्र					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	शहरी	124	49.6	49.6	49.6
	ग्रामीण	126	50.4	50.4	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं का क्षेत्र के आधार पर वितरण लगभग समान पाया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित उत्तरदाताओं की संख्या 126 है, जो कुल का 50.4 प्रतिशत है, जबकि शहरी क्षेत्र के उत्तरदाताओं की संख्या 124 है, जो 49.6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, अध्ययन में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की भागीदारी लगभग संतुलित रही, हालांकि प्रतिशत के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदाताओं की संख्या शहरी क्षेत्र की तुलना में थोड़ी अधिक पाई गई।

तालिका 6: वार्षिक पारिवारिक आय

वार्षिक पारिवारिक आय					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	2 लाख रुपये से कम	53	21.2	21.2	21.2
	2 लाख रुपये –4 लाख रुपये	93	37.2	37.2	58.4
	4 लाख रुपये – 6 लाख रुपये	57	22.8	22.8	81.2
	6 लाख रुपये से अधिक	47	18.8	18.8	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं की वार्षिक पारिवारिक आय के आधार पर वितरण का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता 2 लाख रुपये से 4 लाख रुपये आय वर्ग में आते हैं, जिनकी संख्या 93 है, जो कुल का 37.2 प्रतिशत है। इसके बाद 4 लाख रुपये से 6 लाख रुपये आय वर्ग में 57 उत्तरदाता शामिल हैं, जो 22.8 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। 2 लाख रुपये से कम आय वर्ग में 53 उत्तरदाता पाए गए, जिनका प्रतिशत 21.2 है। वहीं 6 लाख रुपये से अधिक आय वर्ग में 47 उत्तरदाता शामिल हैं, जो कुल का 18.8 प्रतिशत है और यह सबसे कम है। इस प्रकार, अध्ययन में मध्यम आय वर्ग के उत्तरदाताओं की भागीदारी सर्वाधिक दिखाई देती है।

तालिका 7: क्या परिवार में कोई बालिका है?

क्या परिवार में कोई बालिका है?					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	हाँ	174	69.6	69.6	69.6
	नहीं	76	30.4	30.4	100.0
	Total	250	100.0	100.0	

प्रस्तुत सारणी के अनुसार कुल 250 उत्तरदाताओं में से 174 उत्तरदाताओं (69.6 प्रतिशत) ने बताया कि उनके परिवार में बालिका है, जबकि 76 उत्तरदाताओं (30.4 प्रतिशत) ने बताया कि उनके परिवार में बालिका नहीं है। इस प्रकार, अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवारों में बालिका की उपस्थिति पाई गई, जो कुल उत्तरदाताओं का लगभग दो-तिहाई भाग दर्शाती है, जबकि अपेक्षाकृत कम परिवारों में बालिका नहीं पाई गई।

उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण

Descriptive Statistics					
	N	Min	Max	Mean	S.D.
विभिन्न मीडिया माध्यमों से इस अभियान की जानकारी आसानी से उपलब्ध होती है	250	1	5	1.67	.844
अभियान से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है	250	1	5	1.66	.864
शैक्षणिक संस्थानों में इस अभियान की जानकारी दी जाती है	250	1	5	1.64	.840
इस अभियान की जानकारी वाले पोस्टर और बैनर सार्वजनिक स्थलों पर दिखाई देते हैं	250	1	5	1.84	.923
ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अभियान की	250	1	5	1.54	.745

जानकारी का प्रसार समान रूप से हुआ है					
बालिकाओं के विद्यालय जाने की संख्या में हाल के वर्षों में वृद्धि देखी गई है	250	1	5	1.52	.772
शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों और लड़कियों के बीच का अंतर कम हुआ है	250	1	5	1.94	.929
अभिभावक अब बालिकाओं की उच्च शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं	250	1	5	1.77	.869
सरकारी योजनाओं के कारण बालिकाओं की स्कूली उपस्थिति में निरंतरता बनी है	250	1	5	1.80	.820
बालिकाओं के लिए अलग से छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ शिक्षा में वृद्धि का कारक बना है	250	1	5	1.84	.895
यह अभियान बालिका जीवन के प्रति सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाला सिद्ध हुआ है	250	1	5	1.96	.911
सामाजिक स्तर पर बालिकाओं को लेकर चर्चा बढ़ी है	250	1	5	1.98	.973
कई परिवारों में बालिकाओं को निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जा रहा है	250	1	5	1.81	.901
इस अभियान ने कन्या भ्रूण हत्या के प्रति चेतना जागृत की है	250	1	5	2.06	.938
अभियान के कारण महिलाओं के अधिकारों की जानकारी में बढ़ोतरी हुई है	250	1	5	2.01	.936
समाज में अब महिला और पुरुष को समान अवसर देने की प्रवृत्ति प्रबल हो रही है	250	1	5	2.00	.867
कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव को लेकर सजगता बढ़ी है	250	1	5	1.90	.821
शिक्षा और नौकरी के चयन में बालिकाओं को समान प्राथमिकता दी जा रही है	250	1	5	1.85	.888
घर-परिवार में निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार्यता मिली है	250	1	5	1.77	.846
विवाह, उत्तराधिकार और स्वास्थ्य जैसे मामलों में समान अधिकारों की समझ बढ़ी है	250	1	5	2.77	1.175
टेलीविज़न और रेडियो पर अभियान से संबंधित कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होते हैं	250	1	5	1.94	.862
सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बालिकाओं से जुड़े मुद्दों की चर्चा देखी जाती है	250	1	5	1.80	.868
समाचार पत्रों में इस अभियान से जुड़ी घटनाओं की जानकारी दी जाती है	250	1	5	2.33	1.066
मोबाइल इंटरनेट की उपलब्धता से जनमानस अभियान से जुड़ा हुआ है	250	1	5	2.08	.825
जनसंचार माध्यमों से मिलने वाली जानकारी ने बालिकाओं के विषय में जागरूकता बढ़ाई है	250	1	5	1.95	.832
बालिका को अब सामाजिक बोझ के रूप में नहीं देखा जाता	250	1	5	1.74	.770
शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे अधिकारों को लेकर समाज में स्वीकार्यता बढ़ी है	250	1	5	2.05	.947
बालिकाओं की सफलता को समाज में सम्मानपूर्वक स्वीकार किया जा रहा है	250	1	5	1.88	.861
बालिकाओं की सुरक्षा को लेकर सामुदायिक स्तर पर सजगता बढ़ी है	250	1	5	1.94	.932
परिवारों में पुत्र-पुत्री के बीच अंतर की भावना में कमी आई है	250	1	5	2.12	.954
अभियान के नारे और प्रतीकों को लोग पहचानते हैं	250	1	5	2.13	.995
अभियान के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के विषय में स्पष्ट जानकारी उपलब्ध है	250	1	5	2.12	.862
पंचायतों और वार्ड स्तर पर अभियान की गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं	250	1	5	2.52	1.166
इस अभियान को लेकर सरकारी और गैर-	250	1	5	2.21	.881

सरकारी संस्थाएं मिलकर कार्य कर रही हैं					
आम नागरिकों की भागीदारी इस अभियान में देखने को मिलती है	250	1	5	2.20	.834
विद्यालयों में बालिकाओं की उपस्थिति दर में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है	250	1	5	1.99	.797
महिला-सशक्तिकरण की दिशा में अभियान से प्रेरित होकर कई पहल की हैं	250	1	5	2.00	.824
स्वास्थ्य सेवाओं में लड़कियों को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति बढ़ी है	250	1	5	2.04	.806
सामाजिक संगठनों ने बालिकाओं के अधिकारों की रक्षा हेतु सक्रिय भूमिका निभाई है	250	1	5	1.96	.818
कुछ क्षेत्रों में परंपरागत सोच में परिवर्तन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है	250	1	5	1.86	.775
Valid N (listwise)	250				

प्रस्तुत सारणी में वर्णित विवरणात्मक सांख्यिकी के आधार पर स्पष्ट होता है कि सभी कथनों का औसत मान 1 से 3 के बीच पाया गया है, तथा चूँकि मापन पैमाने में दृढ़ता से सहमत = 1 और दृढ़ता से असहमत = 5 निर्धारित किया गया है, इसलिए कम औसत मान उत्तरदाताओं की अधिक सहमति को दर्शाता है। अधिकांश कथनों के औसत मान 2 के आसपास या उससे कम हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि उत्तरदाताओं का झुकाव अभियान के सकारात्मक प्रभावों के प्रति सहमति की ओर है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा में वृद्धि, अभियान की जानकारी का प्रसार, सामाजिक सोच में सकारात्मक परिवर्तन, महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा परिवार एवं समाज में बालिकाओं की स्वीकार्यता से संबंधित कथनों पर उच्च स्तर की सहमति दिखाई देती है। वहीं विवाह, उत्तराधिकार और स्वास्थ्य संबंधी समान अधिकारों की समझ (Mean = 2.77), पंचायत एवं वार्ड स्तर की गतिविधियाँ (Mean = 2.52) तथा समाचार पत्रों में जानकारी (Mean = 2.33) जैसे कथनों के औसत मान अपेक्षाकृत अधिक पाए गए, जो इन क्षेत्रों में सहमति अपेक्षाकृत कम या अनुभव में विविधता को दर्शाते हैं। मानक विचलन के मान सामान्यतः मध्यम स्तर के हैं, जिससे उत्तरदाताओं के विचारों में अत्यधिक भिन्नता नहीं बल्कि एक संतुलित प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। समग्र रूप से परिणाम यह दर्शाते हैं कि अभियान ने जागरूकता, शिक्षा, सामाजिक दृष्टिकोण तथा महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों में सकारात्मक प्रभाव स्थापित किया है।

परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1

- **(H_{01}):** 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर और बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
- **(H_{a1}):** 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर और बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 8: परिकल्पना 1

Correlations			
		'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर	बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार
'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर	Pearson Correlation	1	.831**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	250	250
बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार	Pearson Correlation	.831**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	250	250
**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).			

प्रस्तुत सहसंबंध विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना (H_{01}) को अस्वीकृत कर दिया जाता है क्योंकि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के स्तर और बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार के बीच Pearson सहसंबंध गुणांक 0.831 पाया गया है, जो अत्यधिक सकारात्मक तथा सांख्यिकीय रूप से 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण ($p = 0.000$) है। यह परिणाम वैकल्पिक परिकल्पना (H_{a1}) का समर्थन करता है, जिसके अनुसार इन दोनों चर के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जब लोगों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता का स्तर अधिक होता है, तो उसका

बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति के सुधार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना 2

- **(H_{02}):** ग्रामीण और शहरी उत्तरदाताओं के बीच BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- **(H_{a2}):** ग्रामीण और शहरी उत्तरदाताओं के बीच BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा में महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 9: परिकल्पना 2

One-Sample Statistics				
	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
शहरी उत्तरदाताओं का BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा	125	9.84	4.114	.260
ग्रामीण उत्तरदाताओं का BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा	125	10.25	3.438	.217

One-Sample Test						
	Test Value = 0					
	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
					Lower	Upper
शहरी उत्तरदाताओं का BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा	38.214	124	.000	9.844	9.43	10.46
ग्रामीण उत्तरदाताओं का BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा	48.045	124	.000	10.248	10.02	10.88

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी उत्तरदाताओं की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (BBBP) अभियान के प्रभाव की धारणा में औसत स्तर पर एक उल्लेखनीय अंतर है। शहरी उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 9.84 है जबकि ग्रामीण उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 10.25 है, जिससे यह संकेत मिलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस अभियान की प्रभावशीलता की धारणा अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है। दोनों समूहों के t मान (शहरी: 38.214; ग्रामीण: 48.045) और p मान (.000) अत्यंत महत्वपूर्ण (significant) हैं, जो यह दर्शाते हैं कि इन समूहों की धारणा केवल आकस्मिक नहीं है बल्कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{02}) को अस्वीकृत किया जाता है और वैकल्पिक परिकल्पना (H_{a2}) को स्वीकार किया जाता है कि ग्रामीण और शहरी उत्तरदाताओं के बीच BBBP अभियान के प्रभाव की धारणा में महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 3

- **(H_{03}):** लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में महिला और पुरुषों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- **(H_{a3}):** लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में महिला और पुरुषों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 10: परिकल्पना 3

One-Sample Statistics				
	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
लैंगिक समानता के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण	123	11.05	3.150	.205
लैंगिक समानता के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण	127	10.87	2.741	.169

One-Sample Test						
	Test Value = 0					
	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
					Lower	Upper
लैंगिक समानता के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण	54.011	122	.000	11.051	10.65	11.45
लैंगिक समानता के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण	64.296	126	.000	10.867	10.53	11.20

प्रस्तुत आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालता है कि लैंगिक समानता के प्रति महिला और पुरुष उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में औसत रूप से थोड़ा अंतर अवश्य है–जहाँ महिलाओं का औसत स्कोर 11.05 है और पुरुषों का औसत स्कोर 10.87—परंतु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है। फिर भी, दोनों समूहों के t मान (महिलाएँ: 54.011; पुरुष: 64.296) तथा p मान (.000) यह दर्शाते हैं कि दोनों दृष्टिकोण सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। चूँकि दोनों

समूहों के उत्तरों में न्यून अंतर होते हुए भी यह अंतर आकस्मिक नहीं बल्कि सांख्यिकीय रूप से मान्य है, अतः शून्य परिकल्पना (H_{03}) को अस्वीकृत किया जाता है और वैकल्पिक परिकल्पना (H_{a3}) को स्वीकार किया जाता है कि लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में महिला और पुरुषों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 4

- **(H_{04}):** लोगों की शैक्षिक पृष्ठभूमि और बालिकाओं के प्रति समाज की सोच के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- **(H_{a4}):** लोगों की शैक्षिक पृष्ठभूमि और बालिकाओं के प्रति समाज की सोच के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 11: परिकल्पना 4

One-Sample Statistics				
	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
उच्च विद्यालय या उससे कम शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	37	10.63	3.898	.441
स्नातक तक शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	98	10.09	3.587	.262
स्नातकोत्तर तक शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	70	9.99	3.266	.282
अन्य स्तर के शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	45	10.32	4.474	.445

One-Sample Test						
	Test Value = 0					
	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	95% Confidence Interval of the Difference Lower	Upper
उच्च विद्यालय या उससे कम शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	24.078	36	.000	10.628	9.75	11.51
स्नातक तक शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	38.468	97	.000	10.091	9.57	10.61
स्नातकोत्तर तक शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	35.413	69	.000	9.993	9.43	10.55
अन्य स्तर के शिक्षित लोगों की बालिकाओं के प्रति समाज की सोच	23.173	44	.000	10.317	9.43	11.20

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के दृष्टिकोण में बालिकाओं के प्रति समाज की सोच को लेकर कुछ हद तक अंतर मौजूद है। उच्च विद्यालय या उससे कम शिक्षित लोगों का औसत स्कोर 10.63 है, जबकि स्नातक (10.09), स्नातकोत्तर (9.99), और अन्य स्तर के शिक्षित उत्तरदाताओं (10.32) का औसत थोड़ा कम है। यद्यपि यह अंतर बहुत बड़ा नहीं है, फिर भी t परीक्षण के सभी समूहों में अत्यधिक महत्वपूर्ण p मान (.000) यह दर्शाते हैं कि यह अंतर आकस्मिक नहीं है। इसका अर्थ यह है कि शैक्षिक स्तर बालिकाओं के प्रति समाज की सोच को प्रभावित करता है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{04}) को अस्वीकृत करते हुए वैकल्पिक परिकल्पना (H_{a4}) को स्वीकार किया जाता है कि लोगों की शैक्षिक पृष्ठभूमि और बालिकाओं के प्रति समाज की सोच के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 5

- **(H_{05}):** मीडिया के संपर्क और BBBP अभियान के प्रति जागरूकता स्तर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
- **(H_{a5}):** मीडिया के संपर्क और BBBP अभियान के प्रति जागरूकता स्तर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 12: परिकल्पना 5

Correlations			
		मीडिया के संपर्क	BBBP अभियान के प्रति जागरूकता
मीडिया के संपर्क	Pearson Correlation	1	.721**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	250	250

BBBP अभियान के प्रति जागरूकता	Pearson Correlation	.721**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	250	250
**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).			

प्रस्तुत सहसंबंध विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मीडिया के संपर्क और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के प्रति जागरूकता के बीच एक सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण संबंध है (Pearson Correlation = 0.721, p = .000)। यह सहसंबंध मध्यम से उच्च श्रेणी का है, जो यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे लोगों का मीडिया से संपर्क बढ़ता है, वैसे-वैसे वे इस अभियान के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। चूँकि p-value .01 स्तर पर महत्वपूर्ण है, इसलिए यह संबंध आकस्मिक नहीं बल्कि ठोस है। इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि मीडिया जनजागरूकता फैलाने में एक प्रभावी माध्यम रहा है, और यह अभियान की पहुंच व प्रभावशीलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

परिकल्पना 6

- **(H_{06}):** भोपाल और रायसेन ज़िलों में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- **(H_{a6}):** भोपाल और रायसेन ज़िलों में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 13: परिकल्पना 6

One-Sample Statistics				
	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
भोपाल ज़िला में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव	125	9.85	3.124	.198
रायसेन ज़िला में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव	125	11.55	2.915	.184

प्रस्तुत सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि भोपाल और रायसेन ज़िलों में लैंगिक समानता पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के परिलक्षित प्रभाव के औसत अंकों में स्पष्ट अंतर है। भोपाल जिले का औसत मान 9.85 तथा रायसेन जिले का औसत मान 11.55 है, जो एक उल्लेखनीय अंतर को दर्शाता है। दोनों समूहों के t-मूल्य (भोपाल: 49.842, रायसेन: 62.636) उच्च हैं और दोनों के लिए p-मूल्य .000 है, जो 0.01 के स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{06}) को अस्वीकार किया जाता है और वैकल्पिक परिकल्पना (H_{a6}) को स्वीकार किया जाता है। निष्कर्षतः, यह स्पष्ट है कि इन दोनों जिलों में अभियान का प्रभाव लैंगिक समानता के दृष्टिकोण से अलग-अलग रूप में परिलक्षित हुआ है, जहाँ रायसेन जिले में प्रभाव तुलनात्मक रूप से अधिक दिखाई देता है।

One-Sample Test						
	Test Value = 0					
	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
					Lower	Upper
भोपाल ज़िला में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव	49.842	124	.000	9.848	9.46	10.24
रायसेन ज़िला में लैंगिक समानता पर BBBP अभियान के परिलक्षित प्रभाव	62.636	124	.000	11.548	11.18	11.91

परिणाम और विवेचना

अभियान के प्रति जागरूकता के संदर्भ में अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना कि मीडिया, शैक्षणिक संस्थानों, पोस्टर-बैनर और कार्यक्रमों के माध्यम से इसकी जानकारी व्यापक रूप से पहुँची है। 80% से अधिक उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि यह अभियान बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है तथा भ्रूण हत्या को हतोत्साहित करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला, जैसे बालिकाओं की स्कूल उपस्थिति में वृद्धि, उच्च शिक्षा के प्रति अभिभावकों की रुचि और सरकारी योजनाओं का बढ़ता लाभ। मीडिया की भूमिका अत्यंत प्रभावी पाई गई, विशेषकर टीवी, रेडियो और सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता में वृद्धि हुई।

सामाजिक सोच में भी परिवर्तन परिलक्षित हुआ है–बेटियों के जन्म को उत्सव की तरह देखना, बाल विवाह में कमी, भेदभाव में कमी, तथा निर्णय लेने में बालिकाओं की बढ़ती भागीदारी इसके

प्रमुख संकेत हैं। लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उभरकर सामने आया, जहाँ अधिकांश उत्तरदाता समान शिक्षा, अवसर और अधिकारों के पक्ष में हैं।

विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान ने सामाजिक चेतना को जागृत किया है और सकारात्मक बदलाव लाया है, किंतु यह परिवर्तन अभी पूर्ण रूप से व्यावहारिक स्तर पर स्थापित नहीं हुआ है। विशेषकर ग्रामीण और निम्न आय वर्गों में पारंपरिक सोच और संसाधनों की कमी बाधा बनी हुई है। अतः अभियान की निरंतरता, प्रभावी क्रियान्वयन और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है।

उपसंहार

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान ने मध्य प्रदेश के भोपाल और रायसेन जिलों में सामाजिक स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में। इस अभियान ने समाज की मानसिकता में परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण शुरुआत की है, जिससे लड़कियों को समान अवसर और सम्मान देने की सोच विकसित हुई है।

हालाँकि अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि यह जागरूकता अभी पूर्ण रूप से व्यावहारिक बदलाव में परिवर्तित नहीं हो पाई है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सोच, सामाजिक दबाव और आर्थिक-शैक्षिक सीमाएँ अब भी परिवर्तन की गति को धीमा कर रही हैं। शहरी क्षेत्रों में दृष्टिकोण में सुधार अधिक स्पष्ट है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव सीमित है।

सरकारी योजनाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित कार्यक्रमों ने बालिकाओं के विकास में योगदान दिया है, परंतु इनके क्रियान्वयन में प्रशासनिक समस्याएँ और जागरूकता की कमी के कारण अपेक्षित परिणाम हर स्थान पर नहीं मिल पाए। कई क्षेत्रों में लोग अभी भी इसे केवल सरकारी प्रचार के रूप में देखते हैं।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि इस अभियान की सफलता केवल सरकारी प्रयासों पर निर्भर नहीं है, बल्कि समाज के सभी वर्गों–विशेषकर पंचायत, समुदाय और स्थानीय नेतृत्व–की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। समाज में यह समझ विकसित करना जरूरी है कि बालिकाओं के अधिकार सामाजिक और आर्थिक विकास से जुड़े हैं।

इसके अतिरिक्त, अभियान की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलन अत्यंत आवश्यक है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ संसाधनों की कमी है।

अंततः, इस अभियान की स्थायी सफलता के लिए निरंतर और सशक्त क्रियान्वयन अनिवार्य है। यह स्पष्ट है कि अभियान ने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक मजबूत आधार तैयार किया है, लेकिन इसे पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए सतत प्रयास, जनसहभागिता और जमीनी स्तर पर प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

संदर्भ

[1] नायक, एल. एम. (2024). फीमेल फेटीसाइड इन इंडिया सम ऑब्जर्वेशन. अप्रैल.

[2] राय, एन. (2019). फीमेल फेटीसाइड एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन वीमेन एंपावरमेंट इन इंडिया. 6(4), 117–127.

[3] रेडियोवाला, ए. ए., & एस. मोलवाने, एम. (2021). अ स्टडी ऑन द चैलेंजेस फेस्ड बाय रूरल वीमेन इन एसेसिंग एजुकेशन. जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 65(04), 13–17. https://doi.org/10.37398/jsr.2021.650402

[4] सुनंदम्मा, आर., & काकड़े, ओ. (2020). एन इवैल्यूएशन ऑफ "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" स्कीम इम्प्लीमेंटेड इन विजापुर डिस्ट्रिक्ट इन कर्नाटक स्टेट. कर्नाटक इवैल्यूएशन अथॉरिटी, जुलाई, 1–152.

[5] अग्निहोत्री, आर. आर., & मालीपाटिल, पी. (2018b). अ स्टडी ऑन ब्रीफ इनफॉर्मेशन अबाउट बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ स्कीम. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च, 10, 64287–64291.

[6] साहू, डी. ए. (2023). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ स्कीम: अ मार्च टुवार्ड जेन्डर इक्वालिटी एंड वूमैन एम्पावरमैन्ट. इन्टरनैशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 5(4) 2–6. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2023.v05i04.7645

[7] भट, बी. ए., & कुरैशी, जी. यू. डी. (2019). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मल्टीडिसिप्लिनरी साइंटिफिक रिसर्च (IJAMSR), 2(3), 13–21. https://doi.org/10.31426/ijamsr.2019.2.3.1313

[8] ताबाई, एस. (2017). स्टॉपिंग फीमेल फेटीसाइड इन इंडिया: द फेल्योर एंड अनइंटेंडेड कंसिक्वेंस ऑफ अल्ट्रासाउंड रिस्ट्रिक्शन. जर्नल ऑफ ग्लोबल हेल्थ, 7(1), 1–3. https://doi.org/10.7189/jogh.07.010304

[9] परमार, एस., & शर्मा, ए. (2020). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कैंपेन: एन अटेम्प्ट टु सोशल एंपावरमेंट. जर्नल

ऑफ क्रिटिकल रिव्यूज़, 7(13). https://doi.org/10.31838/jcr.07.13.212

[10] इंडिया, जी. ऑफ. (2019). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ. 1–37. https://doi.org/10.1165/rcmb.2009-0091OC

[11] सरकार, एम. (2025). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एंड कन्याश्री प्रकल्पा: अ कंपरेटिव एनालिसिस. 13(1). https://doi.org/10.25215/1301.143

[12] कुमार, जी. (2023). कैटेलाइजिंग जेंडर इक्वालिटी: अ कंप्रीहेंसिव इवैल्यूएशन ऑफ द बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पॉलिसी इन इंडिया. 19–24.

[13] कपूर, आई., & के, ए. (2021). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ. स्क्रिब्ड, 1–22.

[14] शर्मा, एस. (2023). सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड वीमेन एंपावरमेंट इन रूरल एरियाज इन कॉन्टेक्स्ट ऑफ बेटी बचाओ एंड बेटी पढ़ाओ अभियान: अ केस स्टडी ऑफ वाराणसी डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तर प्रदेश. जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज़ एंड इनोवेटिव रिसर्च (JETIR), *Www.Jetir.Org*, *10*(12), 431–441.

[15] रेड्डी, एस. (2017). इम्पैक्ट ऑफ बेटी पढ़ाओ एंड बेटी बचाओ. 2–5.

[16] झा, एस. आर. (2018). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ प्रोग्राम इन उत्तर प्रदेश. बायोमेडिकल जर्नल ऑफ साइंटिफिक & टेक्निकल रिसर्च, 10(4), 1–5. https://doi.org/10.26717/bjstr.2018.10.001987

[17] अग्रवाल, एस. (2018). बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ. इकॉनमिक डेवलपमेंट ऑफ इंडिया, 1(1), 170–178.

[18] बचाओ, बी., पढ़ाओ, बी., & गांधी, के. (2024). एजुकेशन ऑफ गर्ल चाइल्ड इन इंडिया: प्रेज़ेंट स्टेटस एंड चैलेंजेस. 2(7), 554–569.

[19] बालमुरुगन, जे., & कुमार, ए. पी. एस. (2023). द इफेक्ट्स ऑफ फीमेल फेटीसाइड ऑन जेंडर बैलेंस इन इंडिया. 6(1), 29–34

[20] भरथिराजा, के., & नवीनकुमार, ए. एस. (2024). द इम्पैक्ट ऑफ द बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP) इनिशिएटिव ऑन द लाइव्स ऑफ गर्ल चिल्ड्रेन इन धर्मपुरी. XXV.

[21] चौधरी, एस. के., & कुमारी, पी. (2024). प्रमोशन ऑफ जेंडर इक्वालिटी & वूमन एंपावरमेंट थ्रू सुकन्या समृद्धि योजना (SSY). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन कॉमर्स, मैनेजमेंट & सोशल साइंस (IJARCMSS), 07(04), 146–151.

[22] डेवलपमेंट, एम. ऑफ डब्ल्यू. एंड सी. (2022). बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ नेशनल गर्ल चाइल्ड डे (जनवरी 24). जनवरी *24*.

[23] गर्ग, टी. (2022). टुवर्ड व्हाट एक्स्टेंट हैस बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ बीन सक्सेसफुल इन इम्पैक्टिंग गर्ल एजुकेशन इन इंडिया? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, 10(05), 927–932. https://doi.org/10.21474/ijar01/14797

[24] ओडिशा, जी. ऑफ. (2020). सक्सेस स्टोरीज & प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑन बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एट नयागढ़: द ट्रेल ब्लेजर टु इंक्रीज़ चाइल्ड सेक्स रेशियो (CSR).

[25] पटेल, एस. ए. (2022). रेफ्रेज़िंग द स्लोगन ऐज़ बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ'. कीपिंग 'बेटी पढ़ाओ' फर्स्ट इज़ फिक्सिंग द प्रायोरिटी बेटर थ्रू एजुकेशन. 10(6), 341–348.